

परम पावन मुनिवरों के, पावन चरणों में नमूँ ।  
 शान्त-मूर्ति सौम्य-मुद्रा, आतम आनन्द में रमूँ ॥३॥  
 चाह नहीं है राज्य की, चाह नहीं है रमणी की ।  
 चाह हृदय में एक यही है, शिव-रमणी को वरने की ॥४॥  
 भेद-ज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते हैं ।  
 क्षण-क्षण में अन्तर्मुख हो, सिद्धों से बातें करते हैं ॥५॥

(७)

संत साधु बन के विचरूँ, वह घड़ी कब आयेगी ।  
 चल पड़ूँ मैं मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी ॥टेक॥  
 हाथ में पीछी कमण्डलु, ध्यान आतम राम का ।  
 छोड़कर घरबार दीक्षा की घड़ी कब आयेगी ॥१॥  
 आयेगा वैराग्य मुझको, इस दुःखी संसार से ।  
 त्याग दूँगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी ॥२॥  
 पाँच समिति तीन गुप्ति, बाईस परिषद भी सहूँ ।  
 भावना बारह जु भाऊँ, वह घड़ी कब आयेगी ॥३॥  
 बाह्य उपाधि त्याग कर, निज तत्त्व का चिंतन करूँ ।  
 निर्विकल्प होवे समाधि, वह घड़ी कब आयेगी ॥४॥  
 भव-भ्रमण का नाश होवे, इस दुःखी संसार से ।  
 विचरूँ मैं निज आतमा में, वह घड़ी कब आयेगी ॥५॥

(८)

धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया परिवार,  
 कि तुमने छोड़ दिया परिवार ।  
 धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा, समझा जगत असार,  
 कि तुमने छोड़ दिया संसार ॥टेक॥